सात तत्त्व और कर्म सिद्धान्त –2

जीव तत्त्व

डॉ. पारसमल अग्रवाल

Dr. Paras Mal Agrawal

Visiting Professor and Research Prof. (Retd.)

Oklahoma State University

Stillwater OK 74078 USA, and

Professor of Physics (Retd.)

Vikram University, Ujjain MP INDIA

* निश्चय से जीव = आत्मा,
* व्यवहार से जीव = जीवधारी,

आत्मा

*आत्मा एक अविनाशी सत्ता है।
* आत्मा एक द्रव्य है।
* आत्मा का निर्माण नहीं हो सकता है और आत्मा नष्ट नहीं हो सकती है।
* केवल उसकी पर्याय बदलती रहती है।
* आत्मा अरूपी या अदृश्य है।
* ज्ञान और दर्शन आत्मा के विशेष गुण हैं।

आत्मा के सम्बन्ध में कुछ और

* आत्मा का आकारः आत्मा लगभग शरीर के आकार के तुल्य (थोड़ा कम)।
*एक सूई की नोक जितनी जगह में भी असंख्य जीव रह सकते हैं।
* मोक्ष प्राप्त एक सिद्ध आत्मा अन्तिम शरीर के आकार के अनुसार।
* अधिकतम आकार लोकाकाश के तुल्य हो सकता है। ऐसा अधिकतम आकार निर्वाण प्राप्ति के पूर्व केवली समुद्घात के समय होता है।
* ब्रह्माण्ड मे आत्माओं की संख्या अनन्त।

*एक ही क्षेत्र में कई आत्माएँ एक साथ रह सकती हैं।

Analogy from physics

*एक साथ एक से अधिक द्रव्यों का रहना भौतिक विज्ञान के बोसान (Boson) की याद दिलाता है। समान अवस्था में दो या दो से अधिक (Bosons) रह सकते हैं। किन्तु Fermions ऐसा नहीं करते हैं। (Fermions follow Pauli's Exclusion Principle. Bosons and Fermions are the terms used for material particles. We cannot use for the soul.)

आत्मा एवं जीवधारी

* आत्मा + भौतिक शरीर = जीवधारी।

* आत्मा जीव द्रव्य है।
* भौतिक शरीर कई पुद्गल द्रव्यों का समूह है।
* खून में एक बैक्टेरिया का भी अपना शरीर होता है व उसकी आत्मा होती है।

पुनर्जन्म, पर्याय, शुद्धता

* पूर्वजन्म में कोई आत्मा पुरूष हो तो यह आवश्यक नहीं कि इस जन्म में भी पुरूष हो।

* इसी तरह महिला पर्याय से पुरूष पर्याय नये जन्म में हो सकती है।

* पूर्वजन्म का एक पशु नये भव में देव हो सकता है व एक देव अगले जन्म में पशु बन सकता है।

* कार्मिक नियमों के अनुसार स्वचालित व्यवस्था।

*एक लालची आत्मा, पापी–आत्मा, क्रोधी आत्मा भी कभी शुद्ध आत्मा हो सकती है।

मुक्त और संसारी जीव

* जो आत्माएँ समस्त कर्मों से रहित होती हैं उन्हें शुद्ध आत्माएँ या मुक्त आत्माएँ या सिद्ध कहा जाता है।

* जो आत्माएँ शरीर सहित हैं व जन्म–मरण के चक्र में हैं उन्हें संसारी कहा जाता है।

* अरहंत की आत्मा संसारी आत्मा ही नाम पाती है किन्तु निर्वाण के बाद मुक्त कहा जाता है।

मुक्त आत्माओं के बारे में कुछ और

* सिद्ध।
* कर्म बंधन से रहित पूर्ण शुद्ध आत्मा।
* सदैव के लिये आनन्दमय अवस्था में।
* सर्वज्ञ।
* दूसरों को नियंत्रित नहीं करते।
* इच्छाओं का पूर्ण अभाव।
* सदैव सिद्धालय में निवास।

अरहंतः

* सिद्ध बनने के पूर्व मानव शरीर एवं उस पर्याय में कुछ समय अरहंत।
* सिद्ध अवस्था के पूर्व अरहंत अवस्था।
* चार घातिया कर्मों के क्षय से अरहंत।
* सशरीर परमात्मा या सकल परमात्मा।
* पूर्ण आनन्द। सर्वज्ञ। अन्य को नियंत्रित नहीं करते। कोई इच्छा शेष नहीं।
* आहार के बारे में भिन्न मत।

तीर्थंकर

* तीर्थंकर नामकर्म के उदय से तीर्थंकर पदवी।
* किसी जन्म में विशेष पवित्र भावना से कोई जीव संसार के समस्त दुःखी प्राणियों का दुःख दूर करने की उत्तम भावना करता है तब तीर्थंकर नामकर्म का बंधन होता है।
* वही आत्मा उस कर्म के उदय से तीर्थंकर बनता है व उस आत्मा को समवशरण में धर्मोपदेश द्वारा संसारी जीवों के दुःख दूर करने का अवसर मिलता है।
* Panch kalyanaka

तीर्थंकर

- केवल ज्ञानी तीर्थंकर का धर्मोपदेश इच्छा रहित होता है। केवलज्ञानी को इच्छा नहीं होती है। (रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक 1.8)
- धर्मोपदेश के लिये इन्द्र द्वारा ऑडिटोरियम बनाया जाता है। इसे समवशरण कहा जाता है।
- पुरूष, स्त्री, साधु, साध्वी, देव–देवी, पशु आदि सभी इस समवशरण में व्यवस्थित स्थानों में बैठकर श्रवण करते हैं।

तीर्थंकर

- आनन्द एवं केवलज्ञान आदि आत्मिक अनुभूति के मामले में तीर्थंकर अरहन्त एवं सामान्य अरहन्त में कोई अन्तर नहीं होता है।
- आयुकर्म पूर्ण होने के बाद तीर्थंकर अरहंत भी सिद्ध बनते हैं एवं सामान्य अरहंत भी सिद्ध बनते हैं।

An example:

- 42 की उम्र में तीर्थंकर महावीर अरहंत बने थे। 30 वर्ष तक अरहंत रहे। 72 वर्ष की उम्र में निर्वाण हुआ। निर्वाण के उपरान्त सिद्ध बने।

केवली, जिन, जिनेन्द्र

* सर्वज्ञ (परमात्मा) केवली या जिन कहलाते हैं। यानि अरहन्त और सिद्ध दोनों केवली एवं जिन हैं।
* तीर्थंकर–अरहन्त भी केवली एवं जिन।
* तीर्थंकर–अरहन्त को जिनेन्द्र या जिनेन्द्र देव भी कहा जाता है।
* कोई सूक्ष्म रेखा फिर भी नहीं है कि सामान्य अरहन्त को जिनेन्द्र या जिनेन्द्र देव न कहा जाये।

जैनियों का Hello जय जिनेन्द्र है।

अरहन्त और सिद्ध की पूजा

प्रश्नः यदि अरहन्त एवं सिद्ध किसी का बुरा–भला नहीं करते हैं तो फिर जैन भक्त उनकी पूजा क्यों करते हैं?

उत्तर : (A) आदर्श के रूप में,

(B) पवित्र एवं शुद्ध बनने की प्रेरणा प्राप्त करने हेतु,

(C) पूजा–प्रार्थना से भक्त का अहंकार कम होता है, इससे आध्यात्मिक स्तर ऊँचा होता है, कषाय मंद होती है, इससे पुण्य बन्ध होता है जिसका फल मधुर लगता है।

आत्मा के पाँच प्रकार के भाव

(I) औपशमिक
(II) क्षायिक
(III) क्षायोपशमिक
(IV) औदयिक
(V) पारिणामिक,

(सन्दर्भः तत्त्वार्थसूत्र 2.1)

*औदयिक भाव (कर्मोंके उदय के कारण) क्रोध, लालच, अंहकार, माया, अज्ञानता, संसार का सद्भाव, ये सब औदयिक भाव के कारण से हैं।

*क्षायिक भाव (कर्म क्षय के कारण) सर्वज्ञता शाश्वत सुख या आनन्द इत्यादि सम्बन्धित कर्मों के स्थायी क्षय के कारण से।

*औपशमिक भाव : कर्म सत्ता में होना किन्तु उदय में उस समय न आना। दब जाना यानि उपशम हो जाना।

•दर्शन मोहनीय कर्म के उपशम से औपशमिक सम्यग्दर्शन।

•जैसे :– एक गिलास में गन्दा पानी व किचड़ सारा नीचे बैठ जाये एवं उपर–उपर स्वच्छ पानी हो। जब तक कीचड़ दबा हुआ है तब तक स्वच्छता।

* उपशम सम्यग्दर्शन अधिकतम अन्तर्मुहूर्त के लिये।

*क्षायोपशिक भाव :— कर्म के अंश का अस्थायी रूप से उदय में न आने से प्रगट में होने वाला भाव।

*जैसे :— ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम।

*अक्षर ज्ञान या कोई भी ज्ञान जो हमें है वह अस्थायी रूप से है, वहां न तो सम्बन्धित ज्ञानावरणीय कर्म का पूर्ण क्षय हुआ है और न ही उपशम । अगले जन्म में या कुछ समय बाद ही जो ज्ञान प्रगट है वह कम हो सकता है।

*पारिणामिक भाव :— यह भाव कर्म —निरपेक्ष है। सदैव ज्यों का त्यों है।

*यह तीन प्रकार का है। (I) जीवत्व (II) भव्यत्व (III) अभव्यत्व।

•सिद्ध आत्मा के केवल जीवत्व होता है।

•संसारी जीव के या तो (I)+(II) या (I)+(III)।

(सन्दर्भः तत्त्वार्थसूत्र 2.7)

मुक्ति हेतु पांच भावों में से पारिणामिक भाव आराध्य या आश्रय लेने योग्य है क्योंकि स्थायी है।

~~सिद्ध : क्षायिक, पारिणामिक~~

~~अरहन्त : क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक~~

~~गृहस्थ : क्षायोपशिक, औदयिक, पारिमाणिक, तथा इनके अतिरिक्त किसी गृहस्थ को कभी औपशमिक सम्यक्त्व के रूप में औपशमिक भाव हो सकता है या किसी को क्षायिक सम्यक्त्व (सम्यक्त्व होने के बाद सदैव रहने वाला) हो सकता है।~~

~~मच्छर : क्षायोपशिक, औदयिक, पारिणामिक~~

आत्मा का अन्य से सम्बन्ध

व्यवहार नय से परस्पर सहयोग, सम्मान आदि।

परस्परोपग्रहो जीवानां।

(तत्त्वार्थसूत्र 5.21)

निश्चय नय से ज्ञाता–दृष्टा, अन्य में अपरिवर्तन कर्त्ता, अन्य में दखलन्दाजी नहीं कर सकता।

(समयसार गाथा 73,100)

14 गुणस्थान। विकास की 14 अवस्थाएं एवं इसके आगे सिद्ध अवस्था।

Some examples

(1) पहला गुणस्थान : बहिरात्मा, (May Be राजा, रंक, स्वर्ग का देव, नरकवासी, पशु.....) आध्यात्मिक रूप से अज्ञानी, आत्मा को न जानने वाला।

(4) चौथा गुणस्थान : अन्तरात्मा। गृहस्थ जिसे आत्मज्ञान हो किन्तु व्रत नहीं धारण किये हों। पशु अवस्था में भी चौथा गुणस्थान सम्भव

(5) पांचवा गुणस्थान : व्रतों सहित सम्यग्दृष्टि

(6) छठा गुणस्थान : गृह त्यागी सन्त

(7) सातवा गुणस्थान : गृह त्यागी सन्त आत्मा के प्रति सजग अवस्था में।

(Note: Swinging between 6th and 7th takes place)

(13) तेरहवा गुणस्थान : अरहन्त अवस्था, सशरीर परमात्मा

(14) चौदहवा गुणस्थान : अत्यन्त अल्प समय के लिये निर्वाण के पूर्व।

आत्मा एवं आवेग (soul and emotions)

आवेग (emotions) अस्थायी हैं। बाह्य कारणों के प्रभाव से होते हैं। सहज, स्वाभाविक नहीं।

Emotions का Owner कौन?

उत्तर हेतु प्रतिप्रश्न। नीली झील में नीलापन किसका? पानी का या नीचे की जमीन का?

दूसरा प्रश्नः दोपहर में हमें सूर्य सफेद लगता है। वही सूर्य उसी समय लन्दन वालों को लाल दिखाई देता है। सूर्य वास्तव में सफेद है या लाल है? ललाई किसकी? सफेदी किसकी?

These are wrong questions as per physics.

सही प्रश्न : लाल क्यों व कैसे दिखाई देता है? सफेद कैसे? नीली झील में नीलापन क्यों व कैसे?

'क्रोध किसका' के बदले क्रोध क्यों व कैसे?

मैं कौन हूँ ?

अनेकान्त की आवश्यकता। बैंक का खाता खोलते समय इस प्रश्न का उत्तर अपने नाम, पते, आधार संख्या आदि द्वारा। इस उत्तर को जैन दर्शन व्यवहार नय वाला उचित उत्तर कहता है। इस उत्तर के बिना हमारी दैनन्दिन आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव नहीं।

इस सन्दर्भ में हम पश्चिम जगत के एक प्रसिद्ध लेखक–वक्ता–मनोवैज्ञानिक डॉ. वेन डायर (Wayne Dyer) द्वारा उठाये गये एक प्रश्न पर ध्यान देते हैं।

वेन डायर 'Your Sacred Self" पुस्तक के पृष्ठ 269 पर लिखते हैं।

"बिना कोई लेबल लगाये अपना परिचय देने का प्रयास करो। कुछ पैराग्राफ लिखो जिनमें आपकी उम्र, लिंग, पदवी, भौतिक उपलब्धियां, परिग्रह, प्राप्त अनुभव, विरासत, भौगोलिक वर्णन न हो। इन सब दिखाई देने वाले वर्णन से परे अपने बारे में कुछ पक्तियां लिखो।"

वेन डायर को उत्तर में हम यह कह सकते हैं:

"मैं अमर आत्मा हूँ, मै शरीर नहीं हूँ।"

(समयसार गाथा 6, 38, 73)

यह उत्तर जैन दर्शन का निश्चय नय वाला उत्तर है।

Anekant: Two contradictory answers of the same one question

प्रश्न : क्या मैं मेरे Emotions एवं आत्मा हूँ ?

उत्तर : हाँ अपने क्रोध, अहंकार आदि के प्रति सजग रहो। ये हमें अशान्त बनाते हैं।

~~यह उत्तर अशुद्ध निश्चयनय का है।~~

वही प्रश्न किन्तु विभिन्न उत्तर

प्रश्न : क्या मैं मेरे Emotions एवं आत्मा हूँ ?

उत्तर: नहीं। यह उत्तर परम सचाई है। 'साक्षी' भाव प्राप्ति में यह उत्तर सहायक। यह उत्तर परम शुद्ध निश्चय नय वाला उत्तर कहलाता है।

(समयसार गाथा 51)

Objection: केवल एक बात बोलो। कभी कहते हो प्रोफेसर हो, कभी कहते पैसेन्जर हो, कभी कहते भारतीय नागरिक हो.....। कभी कहते हो Emotions मेरे, कभी कहते हो Emotions मेरे नहीं। विरोध या विरोधाभास?

उत्तर: परिस्थिति एवं सन्दर्भ के अनुसार कथन की आवश्यकता है। विरोध नहीं विरोधाभास है।

~~परम शुद्ध निश्चय नय का उत्तर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।~~

~~वस्तुतः मैं एक शुद्ध, (क्रोध आदि भावों के) परिग्रह रहित, ज्ञान–दर्शनमय हूँ। ऐसे (आत्मा) में रहते हुए एवं लीन होते हुए, (क्रोध आदि) को विनाश की ओर ले जाता हूँ। (आचार्य कुन्दकुन्द, समयसार गाथा 73)~~

व्यावहारिक उपयोग का एक उदाहरण

Official Life एवं Personal Life

एक कम्पनी या देश के CEO को निम्नांकित दो बातों को नहीं भूलना चाहिये।

(I) कम्पनी की सम्पत्ति एवं व्यक्ति की सम्पत्ति का अन्तर

(II) कम्पनी का कार्य कुछ समय छोड़कर कुछ समय अपने घर पर आकर अपने परिवार एवं स्वयं को देना चाहिये।

यह व्यक्ति के हित में भी है व कम्पनी के हित में भी है।

व्यावहारिक उपयोग : एक उदाहरण

Personal Life एवं Spiritual life

अपनी 'व्यक्ति' रूपी कम्पनी के CEO के रूप में कार्य करते हुए निम्नांकित दो बातों को नहीं भूलना चाहियेः–

(I) शरीर–दिमाग आदि की सम्पत्ति एवं आत्मा की सम्पत्ति का अन्तर,

(II) व्यक्ति रूपी कम्पनी का कार्य कुछ समय छोड़कर अपने Spiritual home में आकर स्वयं अपने Soul एवं Soul के परिजन (देव एवं गुरू) के साथ कुछ समय व्यतीत करना (Meditation, Prayer आदि)।

इससे व्यक्ति रूपी कम्पनी को भी लाभ होगा व आत्मिक विकास भी।

Bibliography: Same as for lecture 1

THANK YOU

For comments e-mail to :

parasagrawal@hotmail.com